International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 01-02-2020; Accepted: 15-03-2020; Published: 29-03-2020
Volume 2; Issue 1; 2020; Page No. 17-19

बघेलखण्ड क्षेत्र के पर्यटन में सफेद बाघ के ऐतिहासिक विरासत का साक्षी महराजा मार्तण्ड सिंह व्हाइट टाइगर सफारी पार्क की भूमिका

प्रमोद कुमार सिंह [1], अनुराग सिंह परिहार [2]

[1] पर्यटन प्रबंधन विभाग, संजय गाँधी स्मृति शासकीय स्वशासी महाविद्यालय, सीधी, मध्य प्रदेश, भारत

[2] वाणिज्य विभाग, विंध्या इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट एण्ड साइंस, सतना, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

बघेलखण्ड क्षेत्र के जंगलों से बाघों का गहरा नाता रहा है। लंबे समय से यहाँ पर इनका प्राकृतिक रहबास रहा है। यहाँ जंगलों में वह सभी संसाधन मौजूद रहे हैं जो बाघों एवं अन्य जानवरों को आकर्षित करते रहे हैं। यहाँ का भौगोलिक परिदृश्य ऐसा रहा है कि बाघों को उनकी इश्छा के अनुरूप ठहरने और टहलने में कोई रुकावट नहीं होती थी। करीब पांच दशक पहले तक बाघों को मारने में कोई प्रतिबंध नहीं था, इस वजह से बड़ी संख्या में इनका शिकार भी होता था, इसके बावजूद भी देश के अलग–अलग हिस्सों से बाघ इस क्षेत्र में विचरण करने आते रहे हैं। इस क्षेत्र के जंगलों की संरचना ऐसी रही है कि ऊँचे पहाड़ों में घने वन और नदियों की श्रृंखला रही है। कुछ जगह तो जलप्रपात भी हैं, जिसकी वजह से पानी की जरूरत भी पूरी हो जाती थी। देश में घटती बाघों की संख्या के चलते साठ के दशक से ही जंगल एवं बाघों की सुरक्षा की चर्चा शुरू हो गई थी। व्हाइट टाइगर सफारी पार्क और चिडियाघर के निर्माण को कानूनी रूप देने में करीब दस वर्ष का समय लगा और बाघों को विशेष दर्जा देते हुए इनके संरक्षण की शुरुआत की गई। सतना जिले के मुकुन्दपुर नामक स्थाल पर महराजा मार्तण्ड सिंह व्हाइट टाइगर सफारी पार्क और चिड़ियाघर स्थापित कर फिर से इस क्षेत्र में बाघों का वास स्थल बनाया गया। साथ ही इस स्थल में अन्य जानवरों की संख्या बढ़ाने के भी प्रयास शुरू हुए हैं। महराजा मार्तण्ड सिंह व्हाइट टाइगर सफारी पार्क और चिडियाघर के बन जाने से वन्य–जीवों के प्रति क्षेत्र के लोगों को जानकारी भी हो रही है। दूर–दूर से पर्यटक पार्क और चिडियाघर के वन्य जीवों को देखने के लिए आते हैं। बाड़ों के बाहर से ही वन्य–जीवों की तस्वीरें लेकर लोग इनके बारे में अपनी प्रतिक्रियाएँ सोशल मीडिया पर व्यक्त कर रहे हैं। वर्तमान में, वन्य–जीवों के प्रति जानकारी लोगों तक पहुँचाने में पार्क और चिडियाघर का प्रबंधन प्रमुख भूमिका निभा रहा है।

मूलशब्दः बघेलखण्ड, सफेद बाघ, व्हाइट टागर सफारी, पर्यटन

प्रस्तावना

बाघ शक्ति और सौंदर्य के प्रतीक हैं। मूलतः एक प्रकार से ये इस धरा के वैश्विक विरासत हैं। दुर्लभ बाघ के संरक्षण और संवर्धन के प्रयासों का ही परिणाम है कि 1969 में देश में बाघ के शिकार पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। वर्ष 1972 में जब वन्य प्राणी संरक्षण अधिनियम लागू किया गया तब इस अभियान को और बल मिला। भारत सरकार की योजना में सबसे पहले टाइगर रिजर्व कान्हा को बाघ संरक्षण के लिए चुना गया था। हमारे देश में लगभग पचास टाइगर रिजर्व हैं जिनमें से सात मध्य प्रदेश में हैं। भारत में मुगलकाल से लेकर अंग्रेज़ों के समय तक अर्थात आज़ादी से पहले बाघों का संरक्षण ही इसलिए किया जाता था ताकि उनका आखेट किया जा सके। जबकि आजादी के बाद बाघों को बचाने के लिए संरक्षण योजनाएँ बनाई गयी। पर्यावरण की दृष्टि से 1963 के बाद बाघ का वैज्ञानिक संवर्धन किया जाना आरंभ हुआ जो निरंतर जारी है। प्राचीन रीवा राज्य और वर्तमान का रीवा संभाग हमेशा से वन्य जीवों की बहुलता के लिए विख्यात रहा है। सफेद बाघों के संरक्षण के बाद से बघेलखण्ड का यह क्षेत्र सफेद बाघ की जन्मस्थली के नाम से विश्व विख्यात है। संम्पूर्ण विश्व में बाघों की प्रमुख रूप से आठ प्रजातियाँ हुआ करती हैं, जिनमें रायल बंगाल टागइर, विंध्य का व्हाइट टाइगर, साइबेरियन टाइगर, साउथ चायना, इन्डो चायना, सुमात्रा, बाली तथा जवा जाति के बाघों का अस्तित्व इसर धरती पर रहा है। विश्व में 70 प्रतिशत बाघ भारत के हैं। बाघ सबसे सुन्दर और आकर्षक वन्य प्राणी है। अपने आकर्षक शरीर, अद्भुत बल और शाही चाल के कारण इसे भारत का राष्ट्रीय पशु होने का गौरव प्राप्त है।

अध्ययन उद्देश्य

वैश्विक दृष्टि से बघेलखण्ड सफेद बाघ के पर्यावास के लिए जाना जाता है। प्रस्तुत शोध आलेख में 'मोहन' नामक सफेद बाघ के संरक्षण, सुरक्षा और वंशवृद्धि से संबंधित ऐतिहासिक घटनाओं का सामयिक विश्लेषण किया गया है। साथ ही सफेद बाघ के विरासत को बचाने व उसे संरक्षित करने हेतु महारजा मार्तण्ड सिंह व्हाइट टाइगर सफारी पार्क के निर्माण के औचित्य को रेखांकित किया गया है।

धतंत्र एवं सामग्री संकलन

प्रस्तुत अध्ययन ऐतिहासिक घटनाओं से संबंधित है। अध्ययन में प्राथमिक व द्वितीयक दोनों प्रकार के सूचना स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक आंकड़ों का संग्रह सर्वेक्षण विधि से प्राप्त किया गया है, जिसके लिए प्रत्यक्ष रूप से 'सफारी पार्क' का भ्रमण कर संग्रहित किया गया है। जबकि द्वितीयक सूचनाएँ पत्र–पत्रिकाओं, शोध आलेख, न्यूज पेपर तथा इंटरनेट इत्यादि द्वारा प्राप्त किया है। प्राप्त आंकड़े व तथ्यों को साम्यक रूप विश्लेषित कर अध्ययन हेतु निष्कर्ष व सुझाव प्रस्तुत किये गये हैं।

मोहन सफेद बाघ का इतिहास

सफेद बाघ का अस्तित्व बघेलखण्ड से जुड़ा हुआ है। विंध्य क्षेत्र के राजा मार्तण्ड सिंह ने अपने एक अतिथि राजा अजीत सिंह के सम्मान में 27 मई, 1951 को रीवा राज्य के सीधी जिले के अन्तर्गत बस्तुआ के बरगड़ी जंगल के पनखोरा नाला के पास आखेट कैम्प लगाया था। जब शिकार खेलने निकले तब उन्हें सफेद बाघ दिखा। नौ माह का यह शावक जब राजा के सामने आया तो उन्होंने बंदूक से तुरंत अपनी रक्षा करनी चाही लेकिन जाने क्या हुआ शावक को हमले की मुद्रा में न देख राजा को लगा कि यह आक्रमण नहीं करेगा। वह उसके पास गए तब भी शावक शांत रहा। एक सुंदर, स्वस्थ और स्वभाव के विपरीत घातक न दिखने वाले इस शावक को राजा अपने सहयोगियों के साथ पकड़ लाए और उसे पूरे सम्मान के साथ गोविंदगढ़ के किले में रखा। राजा ने उसका नाम 'मोहन' रखा। लेकिन तीसरे ही दिन सुबह–सुबह सफेद बाघ, मोहन गोविन्दगढ़ के किले की दिवार से फाद कर मुकुन्दपुर के मांद जंगल में छिप गया। जहाँ से उसे पुनः गोविन्दगढ़ किले में लाया गया।

सफेद बाघ मोहन के मिलने के बाद महाराजा मार्तण्ड सिंह ने वन्य प्राणियों के संबंध में सोचने का नजरिया ही बदल गया। उन्होंने अपने विशेष संरक्षण में मोहन का लालन–पालन शुरू करवाया। इस कार्य के लिए पुलबा बैरिया को नियुक्त किया गया। सहल–सरल पुलबा से सफेद बाघ मोहन जल्दी ही घुल मिल गया। दोनों इशारे से बात करते। कई बार तो बाघ बाड़े में मोहन और पुलबा का सीधा बास्ता पड़ा लेकिन परस्पर समझ का रिश्ता कायम रहा पुलबा मोहन और महराज के बीच संदेशवाहक भी रहे। बाघों के पालन पोषण में पुलबा बैरिया की दक्षता को देखते हुए 1973 में सफेद बाघिन सुकेशी के साथ उन्हें राष्ट्रीय प्राणी उद्यान नई दिल्ली भोजा गया। उन्हें तीन बार सर्वोत्कृष्ट जू कीपर का संम्मान मिला। वर्ष 2003 में सेवानिवृत्ति पश्चात् अपने गृह ग्राम गोविन्दगढ़ आ गए। 1943 में बघेलखण्ड की धरते में जन्में पुलबा बैरिया सफेद बाघों की विंध्य से लंम्बी जुदाई और घर वापिसी के जीवान्त साथी हैं।

सफेद बाघ मोहन के युवा होने पर सफेद बाघों की नस्ल बढ़ाने के उद्देश्य से मोहन के लिए जोड़ीदार की तलाश शुरू की गयी और बेगम नाम की साधारण बाघिन से उसका संसर्ग कराया गया। जिससे कई शावकों का जन्म हुआ। लेकिन सभी साधारण रंग के ही शावक हुये। इन्हीं शावकों में सुंदर बाघिन का नाम राधा रखा गया। 1958 में राधा और मोहन से चार शावकों ने जन्म लिया और चारों ही शावक सफेद रंग के थे। इन चारों शावकों में एक नर और तीन मादायें थी। इस तरह सफेद बाघ की वंश रक्षा से राजा मार्तण्ड सिंह की प्रतिष्ठा देशव्यापी हो गई। मोहन ने 34 संतानों को जन्म दिया था। मोहन के कुनबे में बाघों की संख्या सौ से भी अधिक रही है।

जीवनकाल में मोहन की ख्याति देश भर में फैल गई थी। तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू विशेष रूप से इसे देखने विंध्य आये थे। सफेद बाघ को इसीलिए विंध्य की शान कहा जाने लगा। बाद में यहीं से दो सफेद बाघ कोलकाता और एक–एक अमेरिका व इंग्लैंड के चिड़ियाघर भेजे गए। जब 18 दिसम्बर, 1969 को मोहन की मौत हुई तो उसका अंतिम संस्कार राजकीय सम्मान के साथ किया गया था। रीवा के बाघेला संग्रहालय में मोहन का सिर आज भी सहेजकर रखा हुआ है। इस तरह मोहन ने 19 वर्ष तक एक किले में राजा के संरक्षण में सफेद बाघों की अनेक पीढ़ियों को जन्म दिया। मानवता को प्रकृति की अनुपम भेंट देने वाले मोहन की स्मृति एक तरह से अक्षुण्ण और अमर मानी जाएगी क्योंकि उसका वंश खत्म नहीं हुआ बल्कि आज भी है, निरंतर है।

जीन्स म्युटेशन और सफेद बाघ

शारीरिक बनावट और आनुवंशिकी के हिसाब से रीवा रियासत से निकल कर विश्व विख्यात सफेद बाघ अपने आप में विशिष्ट है। इस सबंध में कई प्रश्न उभरत हैं जो मानव की जिज्ञासा को बढ़ाते हैं जैसे– क्या सफेद बाघ एक अलग प्रजाति है ? क्या यह प्रकृति की पहेली 'फ्रीक ऑफ नेचर' है ? क्या यह 'वर्णहीनता' अर्थात 'एल्बीनों' का द्योतक है ? क्या यह 'रंजकता' यानी 'पिगमेन्टेशन' का परिणाम है ? इन तमाम जिज्ञासाओं को दूर करते हुये वैज्ञानिकों ने स्पष्ट किया है कि सफेद बाघ 'एल्बीनो' प्रजाति में नहीं आते हैं। एल्बीनों की आखें गुलाबी होती हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार सफेद बाघ 'रेसेसिव म्युटेन्ट' है। इसकी आंखे नीली होती हैं। यह वर्फ के समान सफेद वन्य प्राणी है, जिस पर हल्की काली या राख के रंग की धारियाँ होती है। नाक भूरी काली होती है, पैरों की गद्दियाँ गुलाबी और आकार में सामान्य बाघ से अपेक्षकृत बड़े और चौड़े कन्धे, अधिक लंम्बाई और बड़ी खोपड़ी बाले होते हैं। सफेद बाघ सामान्य बाघ की ही संताने हैं लेकिन इसे विलक्षण सफेद रंग जीन्स म्युटेशन से मिला है। इसकी कोई अलग प्रजाति नहीं है। यह शुद्ध भारतीय बाघ है। वास्तव में, सफेद और पीले बाघ एक ही बाघिन की संताने हैं। आदतें, रहवास, व्यवहार, सामान्य रंग के बाघ की तरह होते हैं इनका जीवन भी एक जैसा है। इनकी अधिकतम् आयु 16 से 21 वर्ष होती है।

राजतंत्र और शेर का शिकार

अदिम युग में जहाँ शिकार खानें के लिए किये जातें थे वही राजतंत्र के के समय बाघों का शिकार राजाओं की वीरता और शौर से जुड़ा शौक था। जो शाही मोहमानों को दिखाने के लिये किया जाता था। मचान पर चढ़कर बाघ मारने का खेल उस समय का सौकीन खेल माना जाता था। वस्तुतः राजघरानों से शेरों के शिकार का शौक पुराना रहा है। रीवा रियासत के पूर्वजों में महराजा रघुराज सिंह 39, महराजा वेंकटरमण सिंह ने 558, महराजा गुलाब सिंह ने 619 और महराजा मार्तण्ड सिंह 85 बाघों के शिकार किये। महराज मार्तण्ड सिंह ने अपने जीवन काल में शिकार खेलने से जुड़ी घटना (सीधी जिले का बडगड़ी जंगल जहाँ से 'मोहान' को पकड़ा गया था) ने उनका हृदय परिवर्तन कर दिया। मोहन की मोहिनी सूरत के आकर्षण से अभिभूत होकर महराजा ने बाघों का शिकार करना छोड़ दिया।

मुकुन्दपुर मांद वन क्षेत्र एवं सफारी पार्क

मुकुन्दपुर का वन क्षेत्र सतना जिले के अर्न्तगत आता है। सफारी पार्क मुकुन्दपुर कस्बे से सटा मांद का सघन जंगल गोविन्दगढ़ और बेला सड़क मार्ग के बीच में स्थित है। मांद का यह वन क्षेत्र 650 हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैला हुआ है। इसके सौ हेक्टेयर क्षेत्रफल में से 75 हेक्टेयर क्षेत्र में वन्य जीव बाड़े का निर्माण किया गया है, 25 हेक्टेयर क्षेत्र में व्हाइट टाइगर सफारी का निर्माण किया गया है, जबकि शेष वन क्षेत्र संरक्षित वन क्षेत्र की श्रेणी में है। सफारी पार्क के अन्दर 2.5 किलोमीटर की यात्री सड़क बनाई गयी है, पर्यटक इन्हीं सड़कों से पार्क का भ्रमण करते हैं। मुख्य रूप से सफारी पार्क पांच जोन और 40 वन्यजीव बाड़े में विभक्त है। इन बाड़ों में शाकाहरी और मांसाहारी वन्यप्राणियों की विभिन्न प्रजातियों के 397 वन्य जीव आबाद हैं।

भौगोलिक दृष्टि से यह क्षेत्र 24^0 11′ 35″ से 24^0 26′ 25″ दक्षिणी अक्षांश तथा 81^0 6′ 35″ से 81^0 22′ 20″ उत्तरी देशान्तर पर स्थित है। यहाँ का वन क्षेत्र में सागौन, कैथा, बांस और विभिन्न प्रकार की झाड़ियाँ से युक्त जंगल है। यहाँ के जंगल में बारहमासी नदी–नाले, झरने मानवीय निर्माण के बाद भी अपनी प्राकृतिक मौलिकता को बनाये हुये है। बड़गडी के जंगल से मोहन को पकड़ने और उसे गोविन्दगढ़ के किले में रखना और वहाँ से मोहन का भागना और मुकुन्दपुर के मांद जगल में छिपना और वहाँ से पुनः मोहन को पकड़ना इसे यदि आगत का संदेश कहें कि संयोग, मुकुन्दपुर का मांद वन क्षेत्र आने वाले वर्षो में सफेद बाघों का प्रजनन क्षेत्र बनकर मोहन की संतति का गवाह बनेगा ? यह सब समय और नियत का खेल नहीं ? बल्कि सफेद बाघ के विरासत को बचाने व उसे संरक्षित करने का एक ऐतिहासिक कार्य है।

पर्यटन के क्षेत्र में वाइल्ड लाइफ कॉरिडोर का विकास

बघेलखण्ड क्षेत्र के सतना जिले के मुकुन्दपुर में महाराजा मार्तण्ड सिंह व्हाइट टाइगर सफारी पार्क की स्थापना के बाद वाइल्ड लाइफ कॉरिडोर विकसित कर संजय टाइगर रिजर्व व बाधवगढ़ टाइगर रिजर्व के प्रति पर्यटकों में आकर्षण बढ़ेगा, जो पर्यटक खजुराहो और बनारस से आते हैं उनके लिए टाइगर सफारी और बाघ रिजर्व क्षेत्र आदर्श पर्यटन स्थल होगे। पर्यटन के क्षेत्र में अब बघेलखण्ड विकसित और समृद्ध क्षेत्रों में सुमार है। इन स्थलों में देशी–विदेशी पर्यटकों के आगमन से स्थनीय रहबासियों की बेरोजगारी दूर होगी और साथ ही अंचल की आर्थिक स्थिति भी मजबूत होगी।

निष्कर्ष

महराजा मार्तण्ड सिंह प्रकृति प्रेमी थे, सफेद बाघों की दुर्लभता और उसके महत्व को समझ, उन्हें संरक्षण देकर वंशवृद्धि के प्रयास के लिए जब–जब सफेद बाघ का नाम लिया जायेगा तब–तब उसे विश्व में पहचान बनाने वाले तत्कालीन रीवा रियासत के महाराजा मार्तण्ड सिंह का नाम संरक्षणकर्ता के रूप में सम्मान के साथ लिया जायेगा। सफेद बाघ की कहानी का इतिहास बिना महाराजा मार्तण्ड सिंह और मोहन के अधूरा है। मुकुन्दपुर में स्थापित महराजा मार्तण्ड व्हाइट टाइगर सफारी पार्क एवं प्रजनन केन्द्र में विंध्या नाम की सफेद बाघिन के अतिरिक्त राधा और रघु के रूप में सफेद बाघ का जोड़ा सैलानियों को बहुत लुभाता है। पर्यटन प्रेमी, प्रकृति, वन्य प्राणियों की उन्मुखता और जीने तथा विचरण करने, महापुरूषों के सिद्धान्त और मंत्र 'जियो और जीनों दो' से रचनात्मक सरोकार रखने वालों के लिए यह सफारी पार्क आकर्षण का केन्द्र बना है। सामान्य शेरों, बाघों की चर्चा साहित्य और लोक में खूब होती है परन्तु वर्तमान साहित्य में वन्य जीवों में जिस अजूबे की चर्चा होगी उसमें मोहन होगा, महराजा मार्तण्ड सिंह होगे, बघेलखण्ड होगा, गोविन्दगढ़ होगा, मोहान की देख–रेख करने वाले पुलबा बैरिया होगे और

मुकुन्दपुर होगा। अर्थात ये सभी बघेलखण्ड की विरासत है, जिस प्रकार सफेद हाथी, सफेद कबूतर, सफेद परिधान शुभ प्रतीकों के रूप में भारतीय संस्कृति में समाहित है ठीक उसी प्रकार सफेद बाघ शांति और सद्भावना के प्रतीक है। अतः व्हाइट टाइगर सफारी की स्थापना से सफेद बाघ का उसकी जन्मभूमि पर अस्तित्व बहाल करने की यह संवेदनशील पहल सिद्ध हुई है। निश्चित रूप से यह विश्व की पहली टाइगर सफारी है। यह सफारी पार्क सैलानियों के लिए सहज विचरण करने और वन्य जीवों को देखने का एक आदर्श स्थान बन गया है।

स्वीकृतियाँ
प्रस्तुत शोध कार्य का यह अंश रीवा रियासत के महाराजा एवं वन्य–जीव, प्रकृति प्रेमी स्वर्गीय श्री मार्तण्ड सिंह सिंह जूदेव की स्मृति में समर्पित है। शोध कार्य के दौरान आवश्यक सूचनाएँ व जानकारी प्रदान करने के लिए सफारी पार्क के निर्देशक एवं उनके प्रबंधन टीम के प्रति हम आभार व्यक्त करते हैं।

संदर्भ **सूची**

1. ब्रांडर–डनबर, ए. ए. (1923). वाइल्ड एनिमल इन सेन्ट्रल इंण्डिया, पब्लिसर, एडर्वड अर्नाल्ड एण्ड कं. लंदन
2. देसाई, जे. एच. एण्ड मल्होत्रा, ए. के., (1992). 'सफेद बाघ' प्रकाशन, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भरत सरकार, नई दिल्ली
3. द्विवेदी, शशि प्रकाश, विंध्य का गौरव और भारत की शान 'सफेद शेर', रीवा न्यूज, 16 अगस्त 2019
4. जी, इ. पी. 'अल्बिनिस्म एण्ड पार्सियल अल्बिनिस्म इन टाइगर्स', जर्नल ऑफ द बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी, 1959, 56 : 581–587
5. जी, ई. पी. (1964). द वाइल्ड लाइफ ऑफ इंडिया, यूनिट 4, 'व्हाइट टागर ऑफ रीवा', पब्लिसर कूलिन्स, लंदन
6. गोपाल, आर. (1993). फंडामेंटल ऑफ वाइल्डलाइफ मैनेजमेंट, जेएच प्रकाशन इलाहाबाद
7. मिश्रा, सुरेश. रीवा के 'सफेद शेर' की सच्ची कहानी, पत्रिका, 29 जुलाई 2019
8. पार्क सूचना बुलेटिन. महाराजा मार्तण्ड सिंह व्हाइट टाइगर सफारी पार्क एवं चिड़ियाघर, मुकुन्दपुर, सतना, संग्रह दिनांक– 01.02.2019
9. प्रेटर, एस. एम. (2005). इंण्डियन वाइल्ड एनिमल, बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी, बॉम्बे, पृ. 37–45
10. रॉबिन्सन, आर. दि व्हाइट टाइगर ऑफ रीवा एण्ड जीन होमोलॉजी, जिनेटका, 1959, 40 : 198–200
11. सांखला, कैलाश (1978), टाइगर ! 'द स्टोरी ऑफ द इंडियन टाइगर', पब्लिसर साइमन एण्ड शूस्टर, न्यूयॉर्क
12. श्रीवास्तव, ए. बी. वन्य जीव स्वास्थ्य– एक नया अनुशासन : बाघ संरक्षण के लिए आवश्यक, इन्टस पोलिवेट, 2001, 2 : 134–136
13. सिंह, प्रमोद कुमार, सिंह, सचिन कुमार एवं परिहार, अनुराग सिंह. ऐसेसमेन्ट ऑफ टूरिस्ट सटिंस्फेकशन इन महाराजा मार्तण्ड सिंह व्हाइट टाइगर सफारी पार्क, मुकुन्दपुर, इंटेरनेशनल जर्नल ऑफ हूमैनाइटिस एण्ड सोसल साइंस रिसर्च 2019, 5 (2) : 26–30